

National Conference on Microbiome Research Held at SRHU

Dehradun, December 20

Swami Rama Himalayan University (SRHU), Jolly Grant, hosted a two-day national conference on “Microbiome and the Biotic Family: Research and Development Leading to Clinical and Commercial Implications” on December 19 and 20, in collaboration with the Gut Microbiota and Probiotic Science Foundation (GMPSF), India.

The conference was inaugurated by Padma Bhushan awardee Prof. Nirmal K. Ganguly, former Director General of the Indian Council of Medical Research (ICMR) and President of GMPSF. In his inaugural address, Prof. Ganguly underlined the significance of microbiome research in advancing preventive healthcare, personalised medicine, and evidence-based public health interventions in India.

Dr. Rajendra Dobhal, Vice-Chancellor of SRHU, highlighted the university’s emphasis on interdisciplinary research and translational science, particularly in the areas of biomedical innovation and clinical application.

The two-day programme featured technical sessions on a range of themes, including gut microbiome and human health, probiotics and postbiotics, metabolic disorders, cancer therapeutics, gut–brain axis interactions, inflammatory bowel disease, and the role of traditional Indian foods in health and disease. Experts and researchers from institutions such as AIIMS, IIT Roorkee, IISER, National Institute of Nutrition (Hyderabad), BRIC–National Centre for Cell Science (Pune), NII, THSTI, ICGEB, Thapar Institute and the University of Delhi participated in the deliberations.

A panel discussion examined challenges related to clinical validation, regulatory frameworks, and commercial translation of microbiome-based interventions. The conference, which carried eight CME credits awarded by the Uttarakhand Medical Council, concluded with a valedictory session and prize distribution.

The organisers, Research and Development Cell of SRHU headed by Dr Bindu Dey expressed that the conference facilitated academic exchange and collaboration, and reflected the growing importance of microbiome research in addressing contemporary health challenges.



एसआरएचयू में माइक्रोबायोम अनुसंधान पर राष्ट्रीय सम्मेलन संपन्न

देहरादून, 20 दिसंबर

स्वामी राम हिमालयन विश्वविद्यालय (एसआरएचयू), जॉली ग्रांट ने गट माइक्रोबायोटा एंड प्रोबायोटिक साइंस फाउंडेशन (GMPSF), भारत के सहयोग से 19 एवं 20 दिसंबर को “माइक्रोबायोम और जैविक परिवार: नैदानिक एवं व्यावसायिक निहितार्थों की दिशा में अनुसंधान एवं विकास” विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया।

सम्मेलन का उद्घाटन पद्म भूषण से सम्मानित प्रोफेसर निर्मल के. गांगुली, पूर्व महानिदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICMR) एवं GMPSF के अध्यक्ष द्वारा किया गया। अपने उद्घाटन संबोधन में प्रो. गांगुली ने भारत में निवारक स्वास्थ्य सेवा, वैयक्तिकृत चिकित्सा तथा साक्ष्य-आधारित जनस्वास्थ्य हस्तक्षेपों को सुदृढ़ करने में माइक्रोबायोम अनुसंधान की महत्ता को रेखांकित किया।

स्वामी राम हिमालयन विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. राजेंद्र डोभाल ने जैव-चिकित्सीय नवाचार एवं नैदानिक अनुप्रयोगों के क्षेत्र में विश्वविद्यालय द्वारा अंतरविषयक अनुसंधान तथा ट्रांसलेशनल साइंस को दिए जा रहे विशेष महत्व पर प्रकाश डाला।

दो दिवसीय कार्यक्रम के अंतर्गत गट माइक्रोबायोम एवं मानव स्वास्थ्य, प्रोबायोटिक्स एवं पोस्टबायोटिक्स, चयापचय विकार, कैंसर चिकित्सीय अनुसंधान, गट-ब्रेन अक्ष की अंतःक्रियाएँ, इंप्लेमेंटरी बाउल डिज़ीज तथा स्वास्थ्य एवं रोगों में पारंपरिक भारतीय आहार की भूमिका जैसे विविध विषयों पर तकनीकी सत्र आयोजित किए गए। सम्मेलन में एम्स, आईआईटी रुड़की, आईआईएसईआर, राष्ट्रीय पोषण संस्थान (हैदराबाद), ब्रिक-नेशनल सेंटर फॉर सेल साइंस (पुणे), एनआईआई, टीएचएसटीआई, आईसीजीईबी, थापर संस्थान तथा दिल्ली विश्वविद्यालय सहित अनेक प्रतिष्ठित संस्थानों के विशेषज्ञों एवं शोधकर्ताओं ने सहभागिता की।

एक पैनल चर्चा के माध्यम से माइक्रोबायोम आधारित हस्तक्षेपों के नैदानिक सत्यापन, नियामक ढाँचों तथा व्यावसायिक रूपांतरण से संबंधित चुनौतियों पर विस्तृत विचार-विमर्श किया गया। उत्तराखंड मेडिकल काउंसिल द्वारा प्रदत्त आठ सीएमई क्रेडिट के साथ यह सम्मेलन वैलेडिकटरी सत्र एवं पुरस्कार वितरण समारोह के साथ संपन्न हुआ।

सम्मेलन के आयोजकों की ओर से जानकारी देते हुए स्वामी राम हिमालयन विश्वविद्यालय की निदेशक (अनुसंधान) डॉ. बिंदु डे ने बताया कि यह सम्मेलन शैक्षणिक विमर्श एवं आपसी सहयोग को सुदृढ़ करने में सफल रहा तथा समकालीन स्वास्थ्य चुनौतियों के समाधान में माइक्रोबायोम अनुसंधान की बढ़ती भूमिका को प्रभावी रूप से रेखांकित करता है।

